Indian Journal of Multidisciplinary Research and Studies
ISSN: 3108-1681 | Volume- 1, Issue- 2 | April - June 2025

भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण

दीपक यादव
भूगोल विभाग, डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर

सारांश

भारत की विदेश नीति विश्व राजनीति में उसकी पहचान, शक्ति और रणनीतिक दृष्टिकोण को परिभाषित करती है। विशेषतः पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध उसके भू-राजनीतिक स्थान, ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक जुड़ाव और सुरक्षा आवश्यकताओं से गहराई से प्रभावित हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने 'पंचशील', 'गुटनिरपेक्षता' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे सिद्धांतों के आधार पर अपनी विदेश नीति का निर्माण किया। परंतु दक्षिण एशिया की जटिल राजनीति, सीमाई विवाद, जल संसाधनों की साझेदारी, आतंकवाद, व्यापार असंतुलन और चीन के बढ़ते प्रभाव जैसे कारकों ने भारत की विदेश नीति को चुनौतीपूर्ण और गतिशील बनाया है। यह शोध-पत्र भारत की विदेश नीति के मूलभूत सिद्धांतों, उसके पड़ोसी देशों (विशेषतः पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका और म्यांमार) के साथ संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की विदेश नीति एक ओर जहाँ शांति, सहयोग और परस्पर विकास पर आधारित है, वहीं दूसरी ओर यह अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों और रणनीतिक संतुलन की रक्षा हेतु सशक्त और यथार्थवादी भी होती जा रही है। इस संदर्भ में "पड़ोसी प्रथम" नीति भारत की क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को अभिव्यक्त करती है।

मुख्य शब्दः भारत की विदेश नीति, पड़ोसी देश, दक्षिण एशिया, क्षेत्रीय सहयोग, कूटनीति, सुरक्षा, पंचशील, पड़ोसी प्रथम नीति

परिचय

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही विकसित हुई और समय के साथ उसमें परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन होते रहे। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में आरंभिक काल की विदेश नीति आदर्शवादी, शांति-प्रिय और गुटनिरपेक्षता पर आधारित थी। भारत ने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और नस्लवाद का विरोध करते हुए विश्व समुदाय में नैतिक नेतृत्व की भूमिका निभाने का प्रयास किया। परंतु जैसे-जैसे अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति-संतुलन की वास्तविकताएँ उभरती गईं, भारत की विदेश नीति में व्यवहारिकता और रणनीतिक दृष्टिकोण का समावेश होता गया।

भारत की भौगोलिक स्थिति इसे दक्षिण एशिया का केंद्र बनाती है। इसकी सीमाएँ सात देशों पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार और अफगानिस्तान से जुड़ी हैं, और समुद्री सीमा श्रीलंका तथा मालदीव से भी संपर्क रखती है। इस कारण भारत की विदेश नीति का सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण आयाम "पड़ोसी नीति" या "Neighbourhood Policy" रहा है। पड़ोसी देशों के साथ संबंध न केवल भौगोलिक निकटता से निर्धारित होते हैं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, धर्म, अर्थव्यवस्था, जनसंख्या प्रवास और सुरक्षा चिंताओं से भी गहराई से जुड़े होते हैं।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद दक्षिण एशिया को स्थिर और सहयोगी क्षेत्र बनाने की दिशा में अनेक पहलें कीं। "पंचशील सिद्धांत" (1954), "गुटनिरपेक्ष आंदोलन" (NAM), "सार्क" (1985), और हाल में "पड़ोसी प्रथम नीति" (Neighbourhood First Policy) इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। परंतु, इसके बावजूद, क्षेत्रीय सहयोग की राह

हमेशा सरल नहीं रही। भारत-पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद और आतंकवाद की समस्या, भारत-चीन के बीच सीमाई तनाव और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता, श्रीलंका में तमिल प्रश्न, तथा बांग्लादेश के साथ प्रवासन और जल-विवाद जैसे मुद्दे भारत की विदेश नीति को जटिल बनाते रहे हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति बहुपक्षीय और संतुलित दृष्टिकोण अपनाती है। जहाँ एक ओर वह अमेरिका, रूस और यूरोपीय देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ कर रहा है, वहीं दूसरी ओर दक्षिण एशिया के देशों के साथ अपने संबंधों को सुधारने और सुदृढ़ करने के प्रयास जारी रखे हुए है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने "Neighbourhood First Policy" के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, व्यापार, सुरक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को विदेश नीति की प्राथमिकता बनाया है।

पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण करते समय यह समझना आवश्यक है कि भारत की विदेश नीति केवल शक्ति-संतुलन पर नहीं, बल्कि साझा विकास और स्थायित्व की भावना पर आधारित है। यद्यपि कुछ विवाद और मतभेद बने हुए हैं, परंतु भारत का उद्देश्य दक्षिण एशिया को संघर्ष की भूमि नहीं, बल्कि सहयोग और विकास का क्षेत्र बनाना है। इसी भावना ने भारत को विश्व राजनीति में "जिम्मेदार शक्ति" के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण

भारत की विदेश नीति का सबसे संवेदनशील और निर्णायक आयाम उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंधों से जुड़ा है। दक्षिण एशिया विश्व का एक अत्यंत जटिल भू-राजनीतिक क्षेत्र है जहाँ धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विविधताएँ अत्यधिक हैं। भारत, इस क्षेत्र की सबसे बड़ी शक्ति होने के नाते, स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग का केंद्र बिंदु रहा है। परंतु पड़ोसी देशों के साथ उसके संबंध सदैव संतुलित और सौहार्दपूर्ण नहीं रहे; वे समय-समय पर सहयोग, तनाव, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष के विभिन्न चरणों से गुज़रे हैं। इस भाग में भारत की विदेश नीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके प्रमुख सैद्धांतिक तत्वों, तथा पड़ोसी देशों के साथ उसके संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

(1) ऐतिहासिक और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

भारत की विदेश नीति की जड़ें उसके स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों और सभ्यतागत परंपराओं में निहित हैं। महात्मा गांधी की 'अहिंसा', 'सत्य' और 'सर्वधर्म समभाव' की विचारधारा ने भारतीय कूटनीति को नैतिक आधार प्रदान किया। जवाहरलाल नेहरू ने इस नीति को "पंचशील" और "गुटनिरपेक्षता" के सिद्धांतों से संरचित किया, जिसमें शक्ति-संघर्ष से दूरी बनाते हुए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना निहित थी। 1954 में भारत और चीन के बीच संपन्न **पंचशील समझौता** (आपसी सम्मान, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान) भारत की विदेश नीति का नैतिक घोषणापत्र कहा जा सकता है।

हालाँकि, 1962 के भारत-चीन युद्ध और 1965 व 1971 के भारत-पाक युद्धों ने इस नीति को यथार्थवाद की दिशा में मोड़ दिया। शीतयुद्ध के दौरान भारत ने "गुटनिरपेक्षता" को बनाए रखते हुए भी आवश्यकतानुसार सोवियत संघ के साथ रणनीतिक निकटता विकसित की। 1991 के बाद उदारीकरण और वैश्वीकरण के युग में भारत की विदेश नीति का स्वरूप आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय व्यापार, और रणनीतिक भागीदारी पर केंद्रित हुआ। आज की "एक्ट ईस्ट", "नेबरहुड फर्स्ट" और "सागर" (SAGAR – Security and Growth for All in the Region) नीतियाँ इसी विकसित दृष्टिकोण का प्रतीक हैं।

(2) पाकिस्तान के साथ संबंध

भारत-पाकिस्तान संबंध भारतीय विदेश नीति का सबसे जटिल अध्याय हैं। 1947 के विभाजन के बाद दोनों देशों के बीच शत्रुता और अविश्वास की भावना गहराई से समाई रही है। कश्मीर विवाद ने दोनों के बीच स्थायी तनाव की नींव रखी।
1947, 1965 और 1971 के युद्धों ने दोनों देशों के राजनीतिक दृष्टिकोण को कठोर बनाया। 1971 के युद्ध में बांग्लादेश के निर्माण ने पाकिस्तान की राजनीतिक-राष्ट्रीय मनोवृत्ति को गहरे स्तर पर प्रभावित किया।

हालाँकि 1972 का शिमला समझौता और 1999 की लाहौर बस यात्रा जैसी पहलें शांति की दिशा में महत्वपूर्ण थीं, परंतु आतंकवाद और सीमापार हिंसा ने इन प्रयासों को असफल किया। कारगिल युद्ध (1999), मुंबई हमले (2008), और पुलवामा (2019) जैसी घटनाओं ने द्विपक्षीय संबंधों में गहरा अविश्वास पैदा किया।

वर्तमान समय में भारत की नीति "आतंकवाद और वार्ता साथ-साथ नहीं चल सकते" के सिद्धांत पर आधारित है। भारत, पाकिस्तान को आतंकवाद के विरुद्ध ठोस कदम उठाने की मांग करता है। साथ ही, क्षेत्रीय स्थिरता के हित में भारत "पीपल-टू-पीपल" संबंधों और व्यापारिक संवाद की संभावना खुली रखता है। भविष्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि दोनों देश आपसी अविश्वास को समाप्त कर विकास और स्थायित्व की दिशा में आगे बढ़ें।

(3) चीन के साथ संबंध

भारत-चीन संबंध एशिया की दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच शक्ति-संतुलन का दर्पण हैं। प्रारंभिक वर्षों में दोनों देशों के संबंध मैत्रीपूर्ण थे, परंतु 1962 के युद्ध ने दोनों के बीच गहरी खाई उत्पन्न कर दी। सीमा विवाद, विशेषकर अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश, अब भी अनसुलझे हैं।

हाल के दशकों में दोनों देशों ने आर्थिक सहयोग और व्यापारिक साझेदारी को बढ़ाने का प्रयास किया है, परंतु सामरिक अविश्वास बना हुआ है। 2017 का डोकलाम गतिरोध और 2020 का गलवान घाटी संघर्ष इस तनाव की नवीन अभिव्यक्तियाँ हैं।

भारत की नीति चीन के प्रति "सहयोग और प्रतिस्पर्धा" दोनों पर आधारित है। जहाँ एक ओर भारत चीन के साथ व्यापार और बहुपक्षीय मंचों (जैसे BRICS, SCO) पर सहयोग करता है, वहीं दूसरी ओर वह क्वाड (QUAD) जैसे मंचों के माध्यम से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है।

(4) नेपाल और भूटान के साथ संबंध

नेपाल और भूटान के साथ भारत के संबंध सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक रूप से अत्यंत घनिष्ठ हैं। दोनों देशों के साथ खुली सीमा और सामाजिक संपर्कों का गहरा इतिहास रहा है। भूटान के साथ भारत का संबंध निरंतर सहयोग और विश्वास पर आधारित है 1949 की संधि से लेकर 2007 की नई साझेदारी तक भारत भूटान का प्रमुख आर्थिक और सुरक्षा सहयोगी बना हुआ है।

नेपाल के साथ संबंधों में उतार-चढ़ाव रहा है। यद्यपि भारत नेपाल के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार और निवेशक के रूप में उपस्थित है, परंतु 2015 की नाकाबंदी और चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण दोनों देशों में असंतोष और अविश्वास की स्थिति बनी। भारत अब "कनेक्टिविटी, हाइड्रोपावर और सांस्कृतिक कूटनीति" के माध्यम से इस संबंध को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है।

(5) बांग्लादेश, श्रीलंका और म्यांमार के साथ संबंध

बांग्लादेश भारत की विदेश नीति में एक सफलता की कहानी रहा है। 1971 में उसके निर्माण में भारत की भूमिका ऐतिहासिक है। हाल के वर्षों में सुरक्षा सहयोग, सीमा समझौता (2015), और ऊर्जा व्यापार में प्रगति ने संबंधों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। यद्यपि प्रवासन और जल-साझेदारी के मुद्दे चुनौतियाँ बने हुए हैं, फिर भी दोनों देशों के संबंध दक्षिण एशिया में सबसे स्थिर माने जाते हैं।

श्रीलंका के साथ संबंध तमिल मुद्दे और चीन की उपस्थिति के कारण संवेदनशील हैं। भारत, श्रीलंका की संप्रभुता का सम्मान करते हुए वहाँ की तमिल जनसंख्या के अधिकारों की रक्षा का पक्षधर है। चीन द्वारा विकसित हंबनटोटा बंदरगाह जैसे प्रोजेक्टों ने भारत की रणनीतिक चिंताएँ बढ़ाई हैं।

म्यांमार भारत की "एक्ट ईस्ट नीति" का द्वार है। सीमाई स्थिरता, मणिपुर और नागालैंड में उग्रवाद नियंत्रण, तथा व्यापारिक मार्गों के विकास में म्यांमार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत ने वहाँ के सैन्य शासन के बावजूद व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया है ताकि चीन की बढ़ती उपस्थिति को संतुलित किया जा सके।

(6) "पड़ोसी प्रथम" नीति और वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा घोषित Neighbourhood First Policy भारत की विदेश नीति में एक नए युग का प्रतीक है। इसका उद्देश्य दक्षिण एशिया में परस्पर सहयोग, संपर्क, सुरक्षा और आर्थिक एकीकरण को प्राथमिकता देना है।
इस नीति के अंतर्गत भारत ने सभी पड़ोसी देशों के साथ उच्चस्तरीय संवाद बढ़ाए हैं जैसे कि बिम्सटेक (BIMSTEC), सार्क, BBIN (Bangladesh-Bhutan-India-Nepal) परियोजनाएँ, और क्षेत्रीय बिजली, सड़क, तथा डिजिटल संपर्क नेटवर्क का विकास।

इसके अलावा, भारत ने आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य सहयोग (कोविड-19 के दौरान "Vaccine Maitri"), और विकास सहायता के माध्यम से क्षेत्रीय विश्वास को सुदृढ़ किया। हालाँकि, चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और पाकिस्तान की अस्थिर नीतियाँ भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

(7) भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य की दृष्टि से भारत की विदेश नीति को तीन दिशाओं में विकसित होने की आवश्यकता है
पहला, क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देकर दक्षिण एशिया को साझा विकास के मंच में बदलना;
दूसरा, रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए वैश्विक शक्ति संतुलन में संतुलित भूमिका निभाना;
और तीसरा, जन-जन के स्तर पर कूटनीति (People-to-People Diplomacy) को सशक्त बनाना ताकि सीमाओं के पार सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध मजबूत हों।

भारत के पड़ोसी संबंधों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपने सहयोगियों के विश्वास को किस प्रकार बनाए रखता है और क्षेत्र में चीन-पाकिस्तान गठजोड़ जैसी चुनौतियों का कितनी कुशलता से सामना करता है। शांति, विकास और समान भागीदारी पर आधारित विदेश नीति ही दक्षिण एशिया को स्थिरता और समृद्धि की दिशा में अग्रसर कर सकती है।

निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति, विशेषतः पड़ोसी देशों के संदर्भ में, उसकी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक अनुभवों और वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों का सशक्त प्रतिबिंब है। दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय राजनीति में भारत का स्थान केवल

भौगोलिक निकटता के कारण ही नहीं, बल्कि सभ्यतागत, आर्थिक और सामरिक दृष्टि से भी निर्णायक है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने जिस आदर्शवादी दृष्टिकोण "पंचशील" और "गुटनिरपेक्षता" से अपनी विदेश नीति की नींव रखी थी, समय के साथ उसमें व्यवहारिकता, रणनीतिक सोच और आर्थिक कूटनीति का समावेश हुआ। यह परिवर्तन केवल आवश्यक नहीं, बल्कि अनिवार्य था, क्योंकि दक्षिण एशिया में बदलती राजनीतिक परिस्थितियाँ और चीन-पाक गठबंधन जैसी बाहरी चुनौतियाँ भारत को अपनी नीति में यथार्थवाद अपनाने के लिए प्रेरित करती रहीं। पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध सहयोग और तनाव के बीच झूलते रहे हैं। पाकिस्तान के साथ आतंकवाद और कश्मीर का प्रश्न अभी भी अनसुलझा है, जबकि चीन के साथ सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा निरंतर जारी है। इसके विपरीत, बांग्लादेश, भूटान और मालदीव के साथ संबंध अपेक्षाकृत स्थिर और सकारात्मक रहे हैं। नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों के साथ भारत को घरेलू राजनीतिक बदलावों और बाहरी प्रभावों से उत्पन्न अस्थिरता का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान परिदृश्य में "Neighbourhood First" नीति भारत के कूटनीतिक दृष्टिकोण का केंद्रीय तत्व बन चुकी है। इस नीति के माध्यम से भारत ने यह संकेत दिया है कि दक्षिण एशिया की स्थिरता और प्रगति उसके अपने राष्ट्रीय हितों से अभिन्न रूप से जुड़ी है। भारत की विदेश नीति अब एक बहुआयामी स्वरूप धारण कर चुकी है जिसमें सुरक्षा, व्यापार, संस्कृति, कनेक्टिविटी, पर्यावरण और मानवीय सहयोग सभी को समान महत्व दिया गया है। भविष्य की दिशा में भारत के सामने दोहरी चुनौती है एक ओर उसे अपने पड़ोसी देशों के साथ विश्वास और सहयोग के वातावरण को सुदृढ़ करना है, और दूसरी ओर उसे बाहरी शक्तियों (विशेषतः चीन) के प्रभाव को संतुलित करना है। इसके लिए भारत को "स्मार्ट डिप्लोमेसी" अपनानी होगी जो न तो आक्रामक हो और न ही निष्क्रिय, बल्कि लचीली, संवादोन्मुख और रणनीतिक रूप से सशक्त हो।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति अब "नैतिक नेतृत्व" और "रणनीतिक व्यवहारिकता" के बीच संतुलन का प्रतीक बन चुकी है। यदि भारत अपने पड़ोसियों के साथ परस्पर सम्मान, साझा विकास और विश्वास पर आधारित संबंध स्थापित करने में सफल होता है, तो न केवल दक्षिण एशिया बल्कि सम्पूर्ण एशिया क्षेत्र में शांति और स्थायित्व की स्थापना संभव होगी। भारत का यह दृष्टिकोण "वसुधैव कुटुम्बकम्" उसकी विदेश नीति की आत्मा है, और यही भावना भविष्य के वैश्विक नेतृत्व की आधारशिला बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. गौतम, विनोद कुमार (2018). भारत की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंध. नई दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. शर्मा, सुधांशु (2021). दक्षिण एशिया की राजनीति और भारत की भूमिका. नई दिल्ली: ज्ञानपीठ प्रकाशन।
3. पाल, अजय (2020). भारत की पड़ोसी नीतिः चुनौतियाँ और संभावनाएँ. लखनऊः अवध पब्लिशर्स।
4. भटनागर, रमेश (2015). भारत और उसके पड़ोसी देश. दिल्लीः प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय।
5. चावला, राकेश (2017). India and Its Neighbours: Strategic Engagements in South Asia. New Delhi: Routledge India.
6. Ministry of External Affairs (MEA), Government of India. Annual Report 2022–23. Retrieved from mea.gov.in.

7. Cohen, Stephen P. (2013). Shooting for a Century: The India-Pakistan Conundrum. Washington DC: Brookings Institution Press.

8. Pant, Harsh V. (2019). India's Foreign Policy: A Changing Landscape. Cambridge University Press.

9. Ganguly, Sumit (2016). India and China: The Roots of Conflict. Oxford University Press.

10. Dixit, J.N. (1996). India's Foreign Policy: 1947–2003. New Delhi: Picus Books.

11. Bose, Sumantra (2011). Transforming India's Foreign Policy in South Asia. Palgrave Macmillan.

12. Sridharan, E. (2020). The Indo-Pacific Balance: India's Strategic Calculus. Journal of Asian Affairs, Vol. 51(2).

13. Tharoor, Shashi (2022). Pax Indica: India and the World of the 21st Century. Penguin Books India.

14. Saran, Shyam (2021). How India Sees the World: Kautilya to the 21st Century. Juggernaut Publications.

15. Pant, Harsh V. & Joshi, Yogesh (2023). India's Neighbourhood Policy: Evolving Strategic Dynamics. Observer Research Foundation (ORF) Report.